प्रथम अध्याय

जगदीश गुप्त : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

जगदीश गुप्त : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्राकृकथन :–

डॉ. जगदीश गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- जीवन परिचय
- बचपन ।
- मेधावी छात्र।
- चित्रकारिता ।
- शिक्षा ।
- शोध–ग्रंथ ।
- अध्यापन ।
- रचना – सम्मान ।

डॉ. जगदीश गुप्त का कृतित्व

- अभिरूचियाँ और दिशाएँ ।
- कला संदर्भ, शिल्प सहयोग ।
- मूर्ति एवं पुरातत्व : विशेष संदर्भ ।
- प्रातिनिधीक रचनाओं का परिचय
- "शम्बूक", "गोपा–गौतम", "छंद–शती"
- "आदिम एकांत", "काव्य सेतु" रीतिकाव्य संग्रह
- नयी–कविता : स्वरूप और समस्याएँ।
- निष्कर्ष ।

जगदीश गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जगदीश गुप्त नयी कविता के कवि और जाने माने समर्थ समीक्षक भी है । गुप्तजी चित्रकार कवि है। गुप्तजी चित्रकार कवि है। सफल चितेरा होने के कारण शब्द चित्रों में भी रंग संगति एवं औचित्य पर विशेष ध्यान देते है। शब्द चयन में उनकी सुरूचि का परिचय मिलता है। छायावादी रचनाओं से भी उनका निकट का संपर्क रहा है। वे अपनी निष्ठा स्पष्टवादिता एवं सैध्दांतिक आग्रह के लिए विख्यात है। जब हिंदी में नयी कविता का आंदोलन प्रारंभ हुआ तब चारों ओर उन्हें आलाचकों का विरोध सहना पड़ा। "जगदीश गुप्त खुद नयी कविता के कवि और साथ ही समर्थ आलोचक होने के कारण समीक्षकों के अन्यायपूर्ण आक्षेपों का सतर्क प्रतिवाद करते हुए उन्होंने नयी कविता–आन्दोलन को जो गति दी उसमें उन्हें स्वयं सार्थकता का अनुभव हुआ है, यद्यपि विरोध और आघात कम नहीं सहन करने पडे।"[1] अनेक वर्षो तक उन्होंने नयी कविता का सम्पादन कार्य भी किया।

जीवन परिचय :–

डॉ. जगदीश गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश में हरदोई जिले में शाहाबाद गाँव में 5 जुलाई 1926 में हुआ। "जिसे कभी पुष्पावती, कभी अंगाईखेडा कहा गया वह दक्षिण पांचाल क्षेत्र का एक प्राचीन सांस्कृतिक केंद्र था। उसे ही मुगल काल में शाहाबाद नाम लिया।"[2]

बालक जगदीश गुप्त :–

जगदीश गुप्त मुलतः कवि और चित्रकार है। साथ ही उन्होंने आलोचना के क्षेत्र में सफलतापूर्वक अपनी लेखनी चलाई है। उनमें बचपन से ही कविता में ही रूचि रही है। काव्य का पठन–पाठन करने की आस्था उनमें प्रारंभ से ही विद्यमान है। जब वे सीतापुर के "राष्ट्रीय महाजनी पाठशाला" के विद्यार्थी थे तब सीतापुर के साहित्यिक वातावरण की छाया बालक जगदीश पर पडने लगी थी।

बचपन से ही जगदीश का संपर्क डॉ. नवल बिहारी मिश्र जैसे समीक्षकों तथा अनूप शर्मा, वंशीधर शुक्ल और कृपाणजी आदि कवियों से बना रहा। उसी समय शाहाबाद, सीतापुर और कानपुर आदि में सर्वत्र समस्यापूर्तिपरक रचना प्रणाली छायी हुयी थी। इस साहित्यिक वातावरण का प्रभाव भी बालक जगदीश गुप्त पर हुआ। इलाहाबाद पहुँचने पर भी उन्होंने पाया कि वहाँ भी समस्यापूर्तिपरक रचानाएँ निर्माण हो रही है।

मेधावी छात्र :-

अपने छात्र जीवन में ही कुछ अच्छे मित्रों और कवियों का साथ मिलने से जगदीश की मेधावी प्रतिभा अधिकाधिक विकसित होती रही। दोस्तों में प्रतिभा परीक्षा के हेतु छंद लिखे-लिखवाये जाते थे। "छंद-शती" में कवि कथन में स्वंय जगदीश गुप्तजी उन दिनों की याद मुखर करते है कि -

"बी.ए. प्रथम वर्ष में ही संकट सामने आ खडा हुआ। डॉ.रसाल ब्रजभाषा के कट्टर समर्थक थे और गजेंद्रनाथ चतुर्वेदी तथा ईश उपनामधारी एक अन्य धाकड छंदकार मेरे सहपाठी थे, जिनके लिए एक ही दिन में सौ-पचास छंद लिख डालना मामुली बात थी। कम से कम मैंने ऐसी चर्चा सुन रखी थी। प्रतिभा परीक्षण के लिए रसालजी ने हमारे आगे एक जंगी समस्या धर दी -

"सेस मथंक लरै, झरें सम्पा" मैंने इस पर एक ही छंद रचा जो सर्वोपरि माना गया और पुरस्कार का हकदार घोषित हुआ।"[3]

उन दिनों जगदीश गुप्त काव्य का अध्ययन इस प्रकार करने लगे थे। जब उनकी माताजी "नैमिषारण्य" अपने दीक्षा गुरू स्वामी नारदानंदजी के आश्रम पर रहा करती थी, तब कभी-कभी जगदीश गुप्तजी भी उस आश्रम में आया करते थे।

इनका रेल यात्रा में और कभी गोमती के तट पर घुमते फिरते छंदरचना का क्रम सहज रीति से प्रायः निरंतर चला करता था। वहाँ की रेतिली जमीन और खुले आकाश ने ब्रजभाषा में ही नही बल्कि खडीबोली में भी बहुत कुछ लिखने को इन्हें प्रेरित किया। "मेटि के चंद समेटि कै तारक जाने कहाँ चलि जाति विभावरी।" यह छंद वही पर रचा गया।

सन 1946 में "म्योर होस्टल" में रहकर उन्होंने एम.ए. किया।

ब्रजभाषा काव्य के लालित्य ने इन्हें आरंभ में ही मोह लिया। बाद में वे छायावाद की ओर झुके। इस अवधि में उन्होंने विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया। इससे ही उन्हें मौलिक काव्य लिखने की प्रेरणा मिली। वे विशेष रूप से सनेही तथा माखनलाल चतुर्वेदी से प्रभावित हुए।

चित्रकारिता :-

जगदीश गुप्तजी कवि के साथ-साथ एक सफल चित्रकार भी है। वे आधुनिक चित्रकला में निपुण हैं। वर्तमान भारतीय चित्रकारिता की समृध्दि में डॉ जगदीश गुप्तजी ने महत्वपूर्ण

योगदान दिया है। चित्रकला का विधिवत ज्ञान उन्होंने आचार्य क्षितींद्रनाथ मुजुमदार के संपर्क में प्राप्त किया और विभिन्न शैलियों में बहुसंख्य चित्रों का अंकन भी गुप्तजी ने किया है। इसी प्रकार कविता की तरह चित्रकारिता के क्षेत्र में भी गुप्तजी का नाम अक्षुण्ण रहेगा। विशेषतः रेखाचित्र के संदर्भ में भारतीय चित्रकारिता को उनका मौलिक योगदान मिला है।

शिक्षा :–

एम.ए., डी.फिल. चित्रकला एवं संस्कृत में डिप्लोमा (इलाहाबाद विश्वविद्यालय से)"साहित्य वाचस्पति" हिंदी साहित्य सम्मेलन।

शोध ग्रंथ :–

"गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण – काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" आपका प्रस्तुत शोध कार्य भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में प्रथम शोध कार्य रहा है।

अध्यापन :–

सन 1950 से हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। इस विश्वविद्यालय में ही कई वर्षोतक विभागाध्यक्ष रहे और सन 1986–87 में अवकाश प्राप्त किया। तदुपरान्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उच्च शोध की विशेष योजना के अंतर्गत कार्यरत हैं।

रचना सम्मान :–

जगदीश गुप्तजी ने अपने जीवन में अध्यापन कार्य भी किया है। उसके साथ ही वे विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध परीक्षक रहे हैं। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण पदों का भार सँभाला है। जैसे –

प्रधानमंत्री – भारतीय हिंदी परिषद,

भूतपूर्व अध्यक्ष – टीचर्स फोरम, इलाहाबाद विश्वविद्यालय आदि उनके कार्य के लिए उन्हें निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं।

1. ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा द्वारा
   शोध ग्रंथ "गुजराती एवं ब्रजभाषा
   कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन"
   के लिए विशिष्ट सम्मान एवं पुरस्कार।

2. "प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला" पुस्तक
   उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ एवं

साहित्य एकेडेमी मध्यप्रदेश द्वारा
पुरस्कृत एवं सम्मानित।

3. ब्रजभाषा काव्य "छंदशती" उत्तर प्रदेश
हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत एवं
प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित 1984।

डॉ.जगदीश गुप्त का कृतित्व :–

जगदीश गुप्त ने लिखने का कार्य सन 1945 से आरंभ किया। तब से लेकर आज तक उनकी अनेक काव्यकृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है। वे नयी कविता के लब्ध प्रतिष्ठ कवियों में एक है। कवि के साथ–साथ वे एक समर्थ आलोचक, शोधकर्ता, संपादक एवं चित्रकार भी है। उन्होंने कई रचनाओं का निर्माण किया हैं और हिंदी कविता को एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डॉ.जगदीश गुप्तजी से किये पत्राचार के बाद उन्हीं से मिली, छपी हुई सूचि "जगदीश गुप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व" के आधारपर उनकी निम्नलिखित रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं –

प्रकाशन एवं प्रकाशक

वर्ष	पुस्तक	प्रकाशक
1954	नयी कविता संपादन	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। किताबमहल लोकभारती इलाहाबाद।
1955	नॉव के पॉव	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, गोरखपुर।
1957	लेखक और राज्य	भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
1957	गुजराती और ब्रजभाषा कृष्णकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन	हिंदी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ।
1959	शब्द दंश	भारती भंडार, इलाहाबाद।
1961	भारतीय कला के पदचिह्न	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
1961	रीतिकाव्य – संग्रह	ग्रंथम् रामबाग, कानपुर ।
1964	हिम बिद्ध	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
1964	स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षण–कार्य–शिविर	हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

1967	प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
1968	रीतिकाव्य	वसुमति प्रकाशन, इलाहाबाद।
1968	कृष्ण–भक्ति काव्य	वसुमति प्रकाशन, इलाहाबाद।
1970	आदिम एकांत	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
1971	नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
1971	"परिमल" स्मारिका रजत–पर्व	
1972	काव्यसेतु	साहित्य भवन, इलाहाबाद ।
1973	युग्म	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
1973	कवितान्तर	ग्रंथम रामबाग, कानपुर ।
1974	त्रयी – 1	नयी कविता प्रकाशन, नागवासुकि, इलाहाबाद ।
1976	त्रयी – 2	नयी कविता प्रकाशन, नागवासुकि, इलाहाबाद।
1977	शम्बूक	लोकभारती, इलाहाबाद ।
1979	छंद – शती	लोकभारती, इलाहाबाद ।
1981	कला त्रैमासिक बाल–कला अंक	उत्तरप्रदेश ललित कला अकादमी, लखनऊ ।
1983	केशवदास	साहित्य अकादमी, दिल्ली ।
1983	"उध्दवशतक" संपादन	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
1983	नवधा	भारतीय प्रकाशन, मेरठ ।
1984	गोपा–गौतम	वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
1985	बोधिवृक्ष	वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
1985	हिंदी की प्रकृति और विकास	हिंदी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद।
1987	माँ के लिए	नयी कविता प्रकाशन, इलाहाबाद।
1988	साँझ	प्रतिमान प्रकाशन, इलाहाबाद ।
1989	कुम्भ – दर्शन	सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, लखनऊ।
1989	जयंत	जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

1989	त्रयी – 3	नागवासुकि, इलाहाबाद । वितरक जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
1990	माँ के लिए तमिल अनुवाद सहित	हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।
1990	शांता (पुर्णता के क्रम में)	

संपादन :–

पुस्तक	वर्ष
नयी कविता	1984–67
रीति काव्य संग्रह	1961
काव्यसेतु	1972
कवितान्तर	1973
त्रयी – 2	1976
नवधा (अज्ञेय के साथ संपादित)	1983
उध्दव शतक	1983

अभिरूचियाँ और दिशाएँ :–

कला संदर्भ :–

संस्था – संस्थापन – "तूलिका", "रूपशिल्प", "कला संगम" तथा केद्रीय सांस्कृतिक समिति आदि अनेक कला संस्थाओं का स्थापन एवं संचालन। "प्रागैतिहासिक भारत के अज्ञात शिलाओं एवं गुंफाओं की प्राथमिक खोज, शिला–चित्रों की अनुकृतियों का अंकन और प्रकाशन। विभिन्न स्थानों में अनेक एकल चित्र प्रदर्शन ।

1. सन 1959 में सुधीर खास्तगीर द्वारा आमंत्रित तथा प्रसिध्द कला समीक्षक राधा कमल मुखर्जी द्वारा उद्घाटित ।
2. सन 1973, लखनऊ अकादमी में राज्यपाल महामहिम अकबल अली द्वारा उद्घाटित।
3. सन 1976, ललित कला अकादमी दिल्ली में केंद्रीय मंत्री श्री.के.सी.पंत द्वारा उद्घाटित।
4. काठमाण्डू नेपाल – भारतीय राजदूत महामहित एच.सी.सरीन द्वारा उद्घाटित –1985।
5. अन्य अनेक एकल तथा सम्मिलित प्रदर्शन प्रयाग में। श्री सुमित्रानंदन पंत, श्री. राजन नेहरू आदि द्वारा उद्घाटित ।

शिल्प सहयोग :-

निजी कृतियों का अलंकरण आवरण तथा अन्य प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं एवं अभिनंदन ग्रंथों में कलात्मक सहयोग ।

मूर्ति एवं पुरातत्व : विशेष संदर्भ :-

अपने जन्मस्थान शाहाबाद, हरदाई में व्यक्तिगत रूप से प्राप्त दो हजार से अधिक लघु मृण्मूर्तियों (टेराकोटा) का अप्रतिम संग्रह। संग्रह की अन्य वस्तुओं में प्राचीन एवं मध्यकालीन मुद्राएँ एवं अभिद्राएँ पात्र एवं पात्र खण्ड हैं। अधिकांश सामग्री अपने जन्म स्थान से एकत्रित। स्वयं एवं आत्मज अविभनव गुप्त द्वारा उपलब्ध अनेक ताम्रास्य राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली की क्रय-समिति द्वारा प्राप्त एवं प्रदर्शित ।

जगदीश गुप्तजी सामान्य जन की आशा आकांक्षाओं के कवि है। समकालीन कविता के परिदृश्य में गुप्त ऐसे कवियों में एक हैं जो सहज भाषा में सच्ची सृजन क्षमता के लिए व्यापक अनुभूतियों को जनसाधारण तक लाये हैं। जहॉ अन्य कवि पाश्चात्य विचारधाराओं से आक्रान्त हैं, वहाँ गुप्तजी भारतीय चिंतन का शाश्वत तत्व लिए हुए काव्य सृजन में समर्थ हुए हैं।

"शम्बूक", "गोपा-गौतम", "बोधिवृक्ष", इसके अच्छे उदाहरण हैं। ये तीनों संवाद-प्रधान लघुकाव्य हैं। जिस प्रकार "शम्बूक" में एक पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक युग की समस्याओं को चित्रित किया हैं, उसी तरह "बोधिवृक्ष" एवं "गोपा-गौतम" के माध्यम से आज की स्थितियों पर गंभीर रूप में प्रकाश डाला है तथा आधुनिक मनुष्य की जिंदगी की अनेक समस्याओं को स्पर्श किया है। इन सब रचनाओं में कवि का नया चिंतन है, कवि का अपना नया शिल्प है। उन्होंने पौराणिक प्रसंग को लेकर उसमें कई काल्पनिक प्रसंगो की उद्भावना की है। जिसके द्वारा उन्होंने समाज की समस्याओं का विवेचन किया है।

डॉ.जगदीश गुप्त की कुछ प्रातिनिधिक रचनाओं का यहाँ परिचय देना आवश्यक हैं।

1. **शम्बूक :-**

"शम्बूक" डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा लिखित आधुनिक चेतना का खण्डकाव्य है। जिसका रचना काल है 1977। इस काव्य की कथा राम-चरित्र के उत्तरार्ध की शम्बूक वध की घटना है। "शम्बूक" की रचना 1977 में हुई है। जगदीश गुप्त की काव्यकृतियों में "शम्बूक" का विशिष्ट स्थान है। कवि ने "शम्बूक" के माध्यम से अनेक समस्याओं को उठाया है। "अतः "शम्बूक" की प्राचीन

कथा को उसी रूप में प्रस्तुत करना कवि का उद्देश नहीं है। तत्कालीन समाज और व्यवस्था को समकालीन संदर्भो में प्रस्तुत करना कवि का लक्ष्य है।"[4]

"शम्बूक" में कुल मिलाकर आठ अंश (सर्ग) है। कवि सर्ग की जगह "अंश" कहना अधिक उचित समझता है।

राम अयोध्या का शक्तिशाली लोकरक्षक सम्राट है। एक बार रामराज्य में ब्राहमण का पुत्र साँप के काटने से मर जाता है। इस अनर्थ का कारण शम्बूक द्वारा किया गया तप माना जाता है। तब नारद ने बताया कि जब राम विपिन जाकर शम्बूक का वध करेंगे तो विप्र–सुत जीवित होगा। अतः राम विपिन जाकर शम्बूक का वध करने का निश्चय करते है। जब वह शम्बूक के पास पहुँचता है तब शम्बूक राम को जो तर्कपूर्ण उत्तर देता है, जिसमें वह सामंतीय व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था को नकारता है। उसके साथ ही यह भी कहता है कि यह घातक व्यवस्था शीघ्र ही नष्ट होना आवश्यक है

"जो व्यवस्था
वर्ग सीमित स्वार्थ से
हो ग्रस्त
वह विषम
घातक व्यवस्था
शीघ्र ही हो अस्त।"[5]

यह सुनकर राम निरूत्तर हो जाते है। अतः शम्बूक आधुनिक संदर्भ में सटीक आख्यान है। शम्बूक के माध्यम से कवि ने वर्णव्यवस्था तथा सत्तापक्ष के खिलाफ सवालिया चिह्न अंकित करते हुए व्यवस्थावादियों पर प्रहार किया है। भारतीय जनतंत्र में व्यवस्था के द्वारा दबायी जानेवाली आवाज के विरोध को मूलतः रचना का प्रयोजन माना जा सकता है। यही कारण है कि "शम्बूक" नयी कविता की बहुचर्चित प्रबंध काव्य–कृति बन गई है।

2. <u>गोपा–गौतम :–</u>

गोपा–गौतम यह एक संवादरूप खंडकाव्य है। इस काव्य की रचना सन 1984 में हुई है। इस संवाद काव्य में 11 अंश (सर्ग) है। इस काव्य में भिन्न धरातल पर बुद्ध युग के प्राचीन संदर्भ में उसकी नवीन अवतारणा हुई है। इसमें स्त्री–पुरूष के पारस्पारिक संबंध की अंतरंग स्थितियों का निरूपण किया है। और साथ–साथ मानवीय पक्ष का उद्घाटन किया है। इस काव्य में गोपा

(यशोधरा) और गौतम का संवाद है। संवादों की बहुलता और प्रमुखता के कारण इसे स्वयं कविने "संवाद–काव्य" की संज्ञा दी है।

इस संवाद–काव्य में भगवान बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण की पूर्व पीठिका को नये और विश्वसनीय मनोवैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करने का कवि ने प्रयत्न किया है। "प्रचलित मान्यता के अनुरूप गौतम के महाभिनिष्क्रमण को अनुभवत्रय अर्थात जरा, रोग और मृत्यु दर्शन से ही अनुप्रेरित मान लेने पर संसार से उनकी उत्कट विरक्ति की पूरी भूमिका सामने नहीं आती।" [6] स्वयं कवि का मत ऐसा है कि बुढापा, बीमारी और मृत्यू के दर्शन से ही गौतम ने संसार का त्याग नहीं किया बल्कि इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं।

डॉ. जगदीश गुप्त ने इस संवाद काव्य में बुद्ध मे महानिर्वाण से पहले प्रसंग को लेकर इस काव्य का ढाँचा खडा किया है। परंतु इस पौराणिक प्रसंग को लेकर उसमें उन्होंने कई काल्पनिक प्रसंगों की भी उद्भावना की है। इसके द्वारा इन्होंने नारियों की समस्याओं का विवेचन किया है। कवि ने स्वयं कहा है –

"मैंने यशोधरा (गोपा) की नई परिकल्पना की है, जिसमें उसके माता रूप की अपेक्षा नारी रूप प्रधान है। यह स्वाभाविक है कि गौतम की नारी–विषयक धारणा बनाने में गोपा का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विशेष योग रहा हो। अबला पन मुझे उसके सर्वथा अनुपयुक्त लगा जिस गोपा को मैंने रूपायित किया है वह शान्त–सौम्य स्वभाव वाले गौतम की सहधर्मिणी होकर भी सबला है।"[7]

3. **बोधिवृक्ष :–**

बोधिवृक्ष यह एक खण्डकाव्य है। इस काव्य की रचना सन 1985 में हुई है। इस खण्डकाव्य में 16 कविताएँ संकलित है। इस काव्य में भिन्न धरातल पर बुद्ध धर्म के संदर्भ में उसकी नवीन अवतारणा हुई है। इसमें गौतम बुध्द के चरित में आनेवाले लोग और उनके संकट का निवारण अपनी तर्कशुध्द बुद्धी से कैसे जवाब दिये है ? उन्हें उपदेश देकर उन्हें सही मार्ग बतला दिया है, आदिका अंकन जगदीश गुप्तजी ने "बोधिवृक्ष" में किया है।

जगदीश गुप्तजी ने "बोधिवृक्ष" के बारे में कहा है कि –

बुध्द के जीवन को काव्य का विषय बनाने के पीछे मेरे मन में अनेक प्रकार के प्रेरणा–सूत्र सक्रिय रहे। "युग्म" में समाहित वृत्ति की विरागात्मक परिणति, "शम्बूक" के जाति–वर्ण–विरोधी उदार

वैचारिक आधार को और अधिक समृध्द एवं प्रशस्त करने की भावना अर्थकेन्द्रित भौतिकवादी जीवन-दर्शन की अपर्याप्तता और संकीर्णता का बोध, वैज्ञानिक युग में भी आध्यात्मिक आयाम की अपेक्षा, भोगवाद की बढ़ती प्रवृत्ति के बीच त्याग की गरिमा का पुर्नवलोकन मानवीय करूणा और उसकी विश्वव्यापी प्रतीति की सार्थकता तथा के क्षेत्र में अजस्त्र सौन्दर्यात्मक प्रतिमूर्तन की मूल प्रेरणा का आनयन और अन्त में मनुष्यता को बुध्दत्व के चरम उत्कर्ष तक पहूँचाने वाले कर्मनिष्ठ तेजस्वी चिन्तक के प्रति एक भारतीय के नाते प्रमाण-निवेदन इस रचना को सम्भव बनाने में इन सभी का योग लक्षित किया जा सकता है।"[8]

4. <u>छंद - शती :-</u>

डॉ.जगदीश गुप्त की यह 1979 में लिखी हुई रचना है। इसमें डॉ.गुप्त ने मौलिक छंदो का समावेश किया है। यह शताधिक छंदों का रेखानुकृति संयुक्त नव प्रकाशित संकलन है। छंदशती में इन्होने कुछ चुने हुए छंदों का ही संकलन किया है। इस रचना के संबंध में स्वयं कवि ने कहा है -

"इस छंद-शती में मैंने अपने मौलिक छंदों का चयन किया है और वह भी ऐसा नहीं कि समस्त समशील रचनाएँ इसमें आ गयी हो। वस्तुतः इसके अंतर्गत सवैया छंद में जो कुछ ब्रजभाषा में लिखा है, उसमें से भी लगभग आधा अंश ही समाविष्ट हो सका है। क्योंकि सौ से अधिक छंदो का संग्रह भारी पडता है , ऐसा मुझे कई दृष्टियों से लगा।"[9]

छंद-शती के कुछ ही छंद पत्र-पत्रिकाओं मतें प्रकाशित हुए हैं, अधिकांश अप्रकाशित रह है। छंदो के साथ रेखानुकृति को अंकित किया है। इसके संबंध में कवि का मत है -

"छंद-शती में रेखानुकृतियों को विभिन्न छंदों के साथ उनके विविध वर्गो के अनुरूप इस प्रकार समन्वित किया है कि एक समरूपता का वातावरण बन सके। कोई चित्र किसी छंद का भाव पूरी तरह या अंशतः ही व्यक्त करता हो ऐसा नही है। छंदों के अनुरूप उनका निर्माण नहीं हुआ है, केवल सामान्य संगति ही अभिष्ट रही है।"[10]

इस प्रकार डॉ.जगदीश गुप्त का विविध छंदो का रेखानुकृति संयुक्त नवप्रकाशित संकलन है "छंदशती"।

5. <u>आदिम एकान्त :-</u>

सन 1970 में प्रकाशित "आदिम एकांत" यह एक महत्वपूर्ण रचना हैं। इस रचना में डॉ.जगदीश गुप्त के गीतों का संकलन है। यह मुख्य सात अनुभागों में विभाजित है। इस संकलन

में लगभग 104 गीत संकलित किये गए हैं। इन गीतों पर कई दशकों के गीतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से लक्षित होता है।

गीतों का प्रभाव जन–मानस पर किस प्रकार पडता है इसका वर्णन स्वयं कवि ने इस प्रकार किया है –

"मैंने पाया है कि लोकगीतों से लेकर सीने गीतों तक भारतीय जनमानस गीत कहीं इतने गहराई से जकडे हुए हैं कि वह कैसा भी हो, उसे ग्राहय हो जाता है। पर टिकता वहीं है जिसमें अनुभूति की सच्चाई अपने पारदर्शी रूप में प्रकट होती है – ऐसी सहजता के साथ जिसे कृत्रीम रूप में किसी अन्य के लिए उपलब्ध कर पाना संभव नहीं होता। भक्तिभावना को जबरदस्त सीने गीतों की तर्ज में ढालकर गाना मुझे गन्दा लगता रहा है।"[11]

इन गीतों में मानवीय स्नेह –विश्वास, हर्ष–उल्लास, आशा–निराशा, करूणा और उदासी अभिव्यक्त हुई है। गुप्तजी ने सर्वथा संगितशून्य होकर केवल लयबोध के सहारे गीत लिखने का साहस किया है। भाव और छंद के साथ जो भी शब्द बह सके, उन्हें नि:संकोच अपनाया है। छायावादोत्तर हिंदी कविता के विकास क्रम से परिचित कोई भी सचेत कविता पारखी इन गीतोंकं को सरलता से पहचान सकता है। इस संकलन में अंतिम गीत आदिम एकांत है। इसके आधारपर उन्होंने इस संकलन को "आदिम एकांत" शीर्षक दिया है।

इस काव्यसंग्रह में कबीर, सूरदास, जायसी आदि कवियों से लेकर भारतेन्दु हरिश्चंद्र, पंत, प्रसाद, निराला, दिनकर, अज्ञेय तक के कई कवियों की कविताओं का समावेश किया है। कविता के संबंध में गुप्त का मत है कि –

"कविता सौदर्यपूर्ण ढंग से अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किये गये सभी प्रयत्नों में सबसे अधिक समर्थ, सरस और सहजग्राहय प्रयत्न है। संसार के समस्त साहित्य का प्रारंभिक रूप कविता ही रहा है।"[12] इस प्रकार गुप्तजी काव्य को अभिव्यक्ति का सौंदर्यपूर्ण साधन मानते हैं।

6. <u>रीतिकाव्य संग्रह :–</u>

"रीतिकाव्य संग्रह" सन 1961 में प्रकाशित संकलन है। यह रीतिकालीन कवियों की कविताओं का संग्रह किया है।

डॉ. जगदीश गुप्त ने ब्रजभाषा–प्रेम–काव्य को सदा एक मूल्यवान वस्तु माना है। ब्रजभाषा काव्य के प्रति उनकी दृष्टि सौंदर्यपरक रही है। कवि ने भूमिका में रीतिकाव्य की परंपरा, नामकरण रीतिकवियों की जीवन दृष्टि, भक्ति भावना, काव्य का कलापक्ष आदि के संबंध में विस्तृत विवेचन किया है।

"रीतिकाव्य–संग्रह" में 23 कवियों की रचनाओं का संकलन किया है। इसमें मुख्य तीन भाग किये हैं –

अ) रीतिग्रंथों के निर्माता कवि ।

आ) रीति परंपरा के अनुसरण कर्ता कवि।

इ) रीति शैली के कवि।

7. <u>नयी कविता – स्वरूप और समस्याएँ :–</u>

"नई कविता" से लेकर आज तक बहुत समीक्षा पुस्तक पुस्तके लिखी हैं। इन पुस्तकों में जगदीश गुप्त की "नयी कविता – स्वरूप और समस्याएँ" महत्वपूर्ण समीक्षात्मक पुस्तक है। इस पुस्तक में इन्होंने छः भाग किये है।

आधुनिक कविता में आधुनिकताऔर मानवतावादी दृष्टि अपनायी है। इसलिए नयी कविता में नये मनुष्य की प्रतिष्ठा बढा दी है। इसमें आधुनिक कवि मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, कुँवरनारायण आदि कवियों की कविता की समीक्षा की है। यह समीक्षा करते हुए इन्होंने नयी कविता की प्रतिष्ठा बढा दी हैं।इसके साथ हि अज्ञेय का "बावरा अहेरी", बालकृष्ण राव का "रात–बीती" और डॉ. देवराज का "धरती और स्वर्ग" इन काव्यसंग्रहों की भी समीक्षा की है। इस प्रकार आधुनिक कविता की समीक्षा करते हुए इन्होंने आधुनिक कविताओं का स्वरूप स्पष्ट कर दिया हैं।

<u>निष्कर्ष :–</u>

डॉ. जगदीश गुप्त कवि के साथ–साथ एक समर्थ आलोचक, शोधकर्ता एवं संपादक हैं। वे मूलतः कवि और चित्रकार हैं। साथ ही इन्होंने आलोचना के क्षेत्र में सफलतापूर्वक अपनी लेखनी चलाई हैं। उनमें बचपन से ही कविता में रूचि रही है, काव्य पठन करनें की आस्था उनमें आरंभ से ही रही हैं। ब्रजभाषा काव्य के लालित्य ने इन्हें आरंभ में ही मोह लिया। आगे चलकर वे छायावाद की ओर झुके। इस काल में इन्होंने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, जिसके कारण इन्हें मौलिक काव्य लिखने की प्रेरणा मिली।

जगदीश गुप्त खुद नयी कविता के कवि और साथ ही समर्थ आलोचक हैं। वे सामान्य जन की आशा आकांक्षाओं के कवि है। वे एक चित्रकार कवि है। सफल चितेरा होने के कारण शब्द चित्रों में भी रंग–संगति एवं औचित्य पर विशेष बल देते हैं। शब्द–चयन में उनकी सुरुचि का परिचय मिलता है। रीतिकालीन और छायावादी रचनाओं से इनका निकट का सम्पर्क रहा हैं।

आज जगदीश गुप्त की उम्र लगभग 69 वर्ष हैं। सन 1950 से 1986–87 तक इन्होंने इलाहाबाद विश्वविषलय में अध्यापन कार्य किया। इन्होंने लगभग 37 पुस्तके लिखी हैं। उनकी प्रारंभिक रचना "नयी कविता संपादन" सन 1954 में प्रकाशित हुयी। 1954 से लेकर आज तक उनका यह लेखन कार्य चलता रहा। उनका यह लेखन कार्य निरंतन चला है। उनकी सन 1990 की "शांता" नामक रचना पूर्णता के क्रम में हैं।

डॉ.जगदीश गुप्त की जो मौलिक रचनाएँ, प्रकाशित हो चुकी है, उनमें भाव, बुद्धि और कल्पना का मणिकांचन योग हुआ है। भाव की सफलता के लिए कवि ने कथा के मार्मिक अनुभूति प्रसंगो का वर्णन किया है। वस्तु वर्णन में प्रकृति, वन–पर्वत, नदियों, संध्या, प्रातः, रात्रि के वर्णन को स्थान दिया है।

भावपक्ष के साथ कलापाक्ष का भी सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है। कलापक्ष के अंतर्गत सरल और सुबोध भाषा शैली को लिया जाता है। सरल भाषा, प्रभावमयी शैली और मुक्त छंद के प्रयोग ने इनके काव्य को गरिमा प्रदान की है। इनके काव्य में शब्दालंकार और अर्थालंकार स्थान–स्थान पर मिलते हैं। इनके काव्य में व्यंजना, लक्षण–पूर्ण भाषा का प्रयोग भी हुआ है। कहीं कहीं व्यंग्यपूर्ण उक्तियों का भी उपयोग हुआ है। संस्कृत गर्भित भाषा का प्रयोग किया हे। पात्रों के संवाद नाटकियता से परिपूर्ण है। सारे काव्य में आदि से लेकर अन्ततक मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है। एखाद स्थान पर लोकप्रचलित शब्दों के भी कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। संक्षेप में कहा जा सकता हैं कि उनका काव्य विषय – वस्तु, पात्र योजना, दृश्य चित्रण, नायक, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण आदि की दृष्टि से समृद्ध है।

गुप्त स्वयं चित्रकार होने के कारण उनका काव्य भी सशक्त है। उनकी काव्य कला, कला के लिए नहीं, जीवन के लिए हैं। इसी कारण ही इनके चित्रों में और इनके काव्य में हमें जीवन का चित्र स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं। काव्य लेखन में इन्होंने पौराणिक विषय लिए हैं, परंतु इन विषयों के माध्यम से आज की राजनीति और समाज का चित्र गहराई से अंकित हुआ है।

संदर्भ सूची :-

1. डा.टी.आर.भट्ट, "शम्बूक और शुद्र तपस्वी : एक मूल्यांकन", ज्ञानोदय प्रकाशन, "प्रज्ञाश्री" कल्याणनगर धारवाड, प्रथम संस्करण 1989, पृ.34
2. डा.जगदीश गुप्त, "छंदशती", लोकभारती प्रकाशन, 15 – ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 1, प्रथम संस्करण 1980, पृ. 165
3. वही, कविकथन, पृ. 163–164
4. डा.टी.आर.भट्ट, "शम्बूक और शुद्र तपस्वी " एक मूल्यांकन", पृ. 12
5. डा.जगदीश गुप्त, "शम्बूक" , लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद – 1, तृतीय संस्करण 1981, पृ. 45
6. डा.जगदीश गुप्त, "गोपा – गौतम", वाणी प्रकाशन, दिल्ली , प्रथम संस्करण 1984, आधार से पृ. 7
7. वही, पृ. 10
8. डा.जगदीश गुप्त, "बोधिवृक्ष", वाणी प्रकाशन, 4697/5, 21 ए. दरियागंज नई दिल्ली 110 002, प्रथम संस्करण 1987, पृ. 7
9. डा.जगदीश गुप्त, "छंद–शती", लोकभारती प्रकाशन, 15 ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 1, प्रथम संस्करण 1980, पृ. 15
10. वही, पृ. 15
11. डा.जगदीश गुप्त, "आदिम एकान्त", राधाकृष्ण प्रकाशन , 2 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980, पृ. 11
12. डा.जगदीश गुप्त, "काव्य सेतु" साहित्य भवन प्रा.लिमिटेड, इलाहाबाद 3, द्वितीय संस्करण– 1972 ई. पृ. 1